FINAL REPORT OF THE WORK DONE ON THE MINOR RESEARCH PROJECT

Submitted to UGC Western Regional Office, Ganeshkhind, Pune- 411007

"धर्मशास्त्रप्रणीत चार आश्रमव्यवस्था और सांप्रत समयमें ईनकी प्रस्तुतता"

Principal Investigator:

Dr. Ishwar L. Mehra

Associate professor, Dept. of Sanskrit,

St. Xavier's College (Autonomous),

Ahmedabad, Gujarat.

February, 2017

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

Ministry of Human Resource Development, Govt. of India.
Western Regional Office, Ganeshkhind, Pune- 411007

FINAL REPORT OF THE WORK DONE ON THE MINOR RESEARCH PROJECT

1. Title of the Project:: धर्मशास्त्रप्रणीत चार आश्रमव्यवस्था और सांप्रत समयमें ईनकी प्रस्तुतता

2. Name and address of the Principal Investigator: **Dr. Ishwar L. Mehra.**

3. Name and Address of the institution: Department of Sanskrit. St. Xavier's College (Autonomous), Ahmedabad, Gujarat.

4. UGC Approval Letter No. and Date: **F. 23-1220/14.(WRO). Dt.20-02-2015.**

5. Date of Implementation: **20- 02-2015.**

6. Tenure of the Project: **Two Years (February,20, 2015 to February,19, 2017)**

7. Total Grant Allocated: **Rs. 150,000/-**

8. Total Grant Received: **Rs.115, 000/-**

9. Final Expenditure: **Rs. 79,591/-**

10. Title of the Project: धर्मशास्त्रप्रणीत चार आश्रमव्यवस्था और सांप्रत समयमें ईनकी प्रस्तुतता

11. Objectives of the Report:-

1. धर्मशास्त्रोंमें उपदिष्ट चार(ब्रह्मचर्य,गृहस्थ,वानप्रस्थ,संन्यास) आश्रमोंकी विभावना और तदविषयक विवेचनोंका अध्ययन करना और सांप्रत समयमें उनकी उपादेयता जाँचना ।
2. सांप्रत समयकी जीवन पद्धतिको जानना और धर्मशास्त्रप्रणीत चार आश्रमोंके संदर्भमें मूल्यांकन करना
3. धर्मशास्त्रप्रणीत चार आश्रमोंवाली जीवनरीति अपनानेके लाभा-हानिके संदर्भमें मूल्यांकन करके निष्कर्ष दिखाना ।

12. Whether objectives were achieved: **Yes.**

1. धर्मशास्त्रोंमें उपदिष्ट चार(ब्रह्मचर्य,गृहस्थ,वानप्रस्थ,संन्यास) आश्रमोंकी विभावना और तदविषयक विवेचनोंका अध्ययन कीया और सांप्रत समयमें उनकी उपादेयता जाँचने हेतु सर्वेक्षण किया ।

2. सांप्रत समयकी जीवन पद्धतिमें धर्मशास्त्र प्रणीत आश्रमव्यवस्था वाली जीवन रीति जानने के लिये अलग अलग वय जूथ के लोगों का सर्वेत्क्षण किया गया और धर्मशास्त्रप्रणीत चार आश्रमोंके संदर्भमें मूल्यांकन किया गया और उसके आधार पर धर्मशास्त्रप्रणीत चार आश्रमोंवाली जीवनरीति अपनानेके लाभा-हानिके संदर्भमें निष्कर्ष बताया है ।

13. Achievements from the Project: Field Work has been done in few urban places Ahmedabad, Gandhinagar, Kalol, Mehsana, Anand, Rajkot, Surat etc. Collected samples from students as well as professors from these urban areas, analysis have been done and also review the books regarding the topic. Two papers are sent for publication. Once published they will be uploaded on the college website.

14. Summary of the findings: **निष्कर्ष**

मानव जीवनकी ब्ल्यू प्रिन्टः आश्रम व्यवस्था

धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों में हम जिस प्रकारकी आश्रम व्यवस्था को पाते है उसे वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूर्णतः प्रासंगिक सिद्ध कर पाना संभव नही है । देश,काल एवं रचयिता भेदसे विभिन्न स्मृतियों की रचना होती रही है, आज भी स्मृति ग्रन्थोमें देश कालानुसार परिवर्तन होता रहा है । मनुस्मृतिमें कहा गया है कि, अन्ये कृतयुगे धर्मास्त्रेतायां द्वापरेऽपरे । अतो कलियुगे नृणां युगह्रासानुरूपतः ।।मनु. 1/85 अतः कालानुसार धर्म अलग हो सकता है । पराशर ऋषि परिवर्तन को युगानुरूप एवं अभिनन्दनीय बताते हुए कहते हैं, युगे युगे तु ये धर्मास्तत्र तत्र च ये द्विजाः । तेषां निन्दा न कर्तव्या युगरूपा हि ते द्विजाः ।। पराशर स्मृति 1/33 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय संविधान ही प्रमाणभूत है । उसके आधार पर समता व न्यायपूर्ण धार्मिक आश्रम व्यवस्था उचित हो सकती है ।

स्मृतिकालिन आश्रम व्यवस्था व्यक्तिके आद्यात्मिक लक्ष्यको लक्षित करने वाली है । यह व्यवस्था मनुष्य जीवन के लिये उचित समय पर धर्म, अर्थ, काम को प्राप्त करने के पश्चात् अन्तिम लक्ष्य मोक्षकी प्राप्ति है । फिर भी इस व्यवस्था में कुछ ऐसे विवेचन है जिनका यथोचित निर्वाह कर पाना वर्तमानमें सम्भव नहीं दिखता है । यदि चारों आश्रमों के उपरी ढाँचे पर विचार किया जाये तो सम्भवतः वानप्रस्थ को छोडकर अन्य सभी आश्रमों की आंशिक प्रासंगिकता सिद्ध की जा सकती है ।

15. Contribution to the society: - **संशोधन के लाभ**

1. भारतीय समाज जीवनरीतिके बारे में दोलायमान है । वैश्विकीकरण और आधुनिकीकरणकी दौड में सही ढंगसे जीनेके उपाय खोज रहा है । ईन हालातोंमें यदि ईन चार (ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम) आश्रमोंकी उपकारकता बताइ जाये तो विस्मृत हो रही भारतीय संस्कृतिको समुचित गौरव प्राप्त हो सकता है । और लोगोंकी सही जीवनरीतिसे व्यापक राष्ट्र कल्याण एवं राष्ट्रिय मूल्योंका संवर्धन होगा ।
2. अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपने प्रदेश,धर्म और कालानुसार विभिन्न जीवनरीतियाँ पायी जाती है । विश्वके कईं राष्ट्रके लोग भौतिकवादी एवं भोगवादी जीवनरीतिसे उब गये है । वे लोग मानसिक शान्ति पानेके लिये भारतीय आद्यात्मिक उपायोंका सहारा ढूँढते है । ईन हालातोंमें इस अध्ययनके प्रमाणोंको लेकर वैश्विक स्तर पर अपने अपने प्रदेश,धर्म और कालानुसार समुचित परिवर्तन करके जीवनरीतियोँमें सुधार लाया जा सकता है । मानवजीवनको संयमित और सुदृढ

करनेवाली जीवनपद्धतिके रूपमें चार (ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम) आश्रमोंका अध्ययन सर्वदेशीय, सर्वकालिक और शाश्वत है ।

लोग अपनी जीवन रीति का मूल्यांकन कर सकते है । और भावि पीढी को समुचित मार्गदर्शन कर सकते है ।

16. Whether any Ph.D. enrolled/produced out of the project : **No**

17. No. of publications out of the project:-**Two papers are sent for publication. Once published they will be uploaded on the college website.**

Dr. Ishwar L. Mehra

Principal Investigator
St. Xavier's college (Autonomous),
Ahmedabad, Gujarat.

Principal

St. Xavier's college (Autonomous),
Ahmedabad, Gujarat.

Seal

Index

CHAPTER – I PAGE NO.

INTRODUCTION & BACKGROUND OF THE STUDY (07-17)

- संशोधन का प्रारुप 08
- प्रास्ताविक 14

CHAPTER – II PAGE NO.

LITERATURE REVIEW (18-25)

- धर्मका अर्थ एवं धर्मशास्त्रका परिचय 19

- चार आश्रमों की संकल्पना 29
- आश्रम शब्दका अर्थ 33
- आश्रम व्यवस्थाका आविर्भाव 34
- आश्रममें प्रवेशकी आयु 40
- आश्रम क्रम- 42
- आश्रम धर्म 45
- ब्रह्मचर्याश्रम 47
- गृहस्थाश्रम 65
- वानप्रस्थाश्रम 122
- संन्यासाश्रम 137

CHAPTER – III

PAGE NO.

METHOD & DESIGN (159-167)

- संशोधन हेतु 160
- संशोधन समस्या 160
- संशोधनके निदर्शन चयन 161
- संशोधन प्रविधि 162
- संशोधनके साधन 162
- प्राप्ताङ्को की गणना 163
- अङ्कशास्त्रीय पद्धति 164

CHAPTER – IV

PAGE NO.

RESULTS & DISCUSSION (168-176)

- फलितार्थ एवं चर्चा 169

CHAPTER – V

PAGE NO.

CONCLUSION & FUTURE IMPLICATION (177-194)

- संशोधन के लाभ 178
- संशोधन की मर्यादा 179
- निष्कर्ष 180
- सुझाव 196

REFERENCES (197-199)

- सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि 198

APPENDIX (200-207)

- कसौटी पत्र 200